# सामाजिक विज्ञान

## (इतिहास)

## अध्याय-5: शासक और इमारतें

## स्मारक और उनका महत्व

स्मारक इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं क्योंकि वे हमें लोगों की धार्मिक मान्यताओं के बारे में बताते हैं और हमें उस समय के वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। मध्यकाल में अधिकतर दो प्रकार की संरचनाएं बनाई जाती थीं। संरचनाओं के पहले समूह में किले, महल और रईसों के निवास, उद्यान और मकबरे शामिल थे। दूसरे समूह में वे संरचनाएं शामिल थीं जो सार्वजनिक उपयोग के लिए थीं जैसे मंदिर, मस्जिद, कुएं, टैंक और बाजार। इमारतों के दूसरे समूह का निर्माण करके, राजा यह दिखाना चाहते थे कि वे अपनी प्रजा की परवाह करते हैं और लोगों का समर्थन और वफादारी जीतने की कोशिश करते हैं।

वास्तुकला के सामान्य डिजाइन

- भारतीय उपमहाद्वीप में इमारतों की एक सामान्य विशेषता एक विस्तृत अधिरचना (भूतल के ऊपर एक इमारत का हिस्सा) का निर्माण था।
- वास्तुकारों ने मौजूदा इमारतों में और कमरे, दरवाजे और खिड़कियां जोड़ीं। इन्हें दो लंबवत स्तंभों में एक क्षैतिज बीम रखकर जोड़ा गया था। वास्तुकला की इस शैली को ट्रैबीट या कॉर्बेल्ड के रूप में जाना जाता है।
- इस शैली का प्रयोग मंदिरों, मकबरों और मस्जिदों और इन भवनों के भीतर या उनके निकट स्थित बावड़ियों के निर्माण में तेजी से किया जाने लगा।
- बारहवीं शताब्दी के स्मारकों से दो तकनीकी शैलियाँ स्पष्ट हैं। पहला यह है कि दरवाजे और खिड़कियों के ऊपर अधिरचना के भार को ले जाने के लिए मेहराब बनाए गए थे। इस शैली को आर्क्यूएट तकनीक के रूप में जाना जाने लगा।
- दूसरे, निर्माणों में चूना पत्थर सीमेंट का तेजी से उपयोग किया जाने लगा। चूंकि यह कठोर गुणवत्ता वाला सीमेंट था, इसलिए पत्थर के चिप्स के साथ मिश्रित होने पर यह कंक्रीट में कठोर हो जाता है। इसने संरचनाओं के निर्माण को आसान और तेज बना दिया।

यहाँ इस अवधि के कुछ महानतम स्मारक हैं।

## क़ुतुबमीनार

कुतूबतमीनार पाँच मंजिली इमारत है। क़ुत्बुउद्दीन ऐबक ने लगभग 1199 में इसका निर्माण करवाया था। शेष मंज़िलो का निर्माण 1229 के आस-पास इल्तुतमिश द्वारा करवाया गया।



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

अभिलेखों की पट्टियाँ इसके पहले छज्जे के नीचे छोटे मेहराब तथा ज्यामितीय रूपरेखाओं द्वारा निर्मित नमूने को देखें।

ये अभिलेख अरबी में है।मीनार का बाहरी हिस्सा घुमावदार तथा कोणीय है। ऐसी सतह पर अभिलेख लिखने के लिए काफ़ी परिशुद्ता की आवश्यकता होती थी सर्वाधिक योग्य कारीगर ही इस कार्य को संपन्न कर सकते थे।

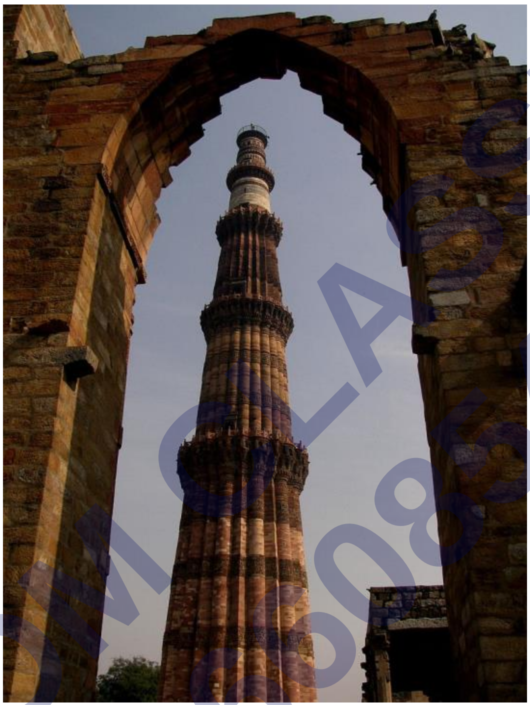

वस्तुकला की यह शैली ' अनुप्रस्थ टोडा निर्माण ' कहलाई जाती है। आठवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच मंदिरों, मसजिदों, मकबरों तथा सीढ़ीदार कुओं (बावली) से जुड़े भवनों के निर्माण में इस शैली का प्रयोग हुआ।

बारहवीं शताब्दी में दो प्रौधोगिकीय एवं शैली संबंधी परिवर्तन दिखाई पड़ने लगते है -1. दरवाजों और खिड़कियों के ऊपर की अधिसरचना का भार कभी-कभी मेहराबों पर दाल दिया जाता था। वास्तुकला का यह ' चापाकार ' रूप था।



SHIVOM CLASSES 8696608541

निर्माण कार्य में चूना-पत्थर, सीमेंट का प्रयोग बढ़ गया। उच्च श्रेणी की सीमेंट होती थी, जिसमें पत्थर के टुकड़ो के मिलाने से कंकरीट बनती थी। इसकी वजह से विशाल ढाँचों का निर्माण सरलता और तेज़ी से होने लगा।

## मंदिर

इस दौरान बनाए गए मंदिरों का निर्माण खूबसूरती से किया गया था। कई बड़े मंदिरों का निर्माण राजाओं ने करवाया था। कई बार, एक मंदिर के निर्माण के माध्यम से, शासक ने अपनी स्थिति को सबसे शक्तिशाली और दिव्य के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। लोग मंदिरों को राजाओं और उसके सहयोगियों द्वारा शासित राज्य का लघु मॉडल मानते थे। मंदिरों में पूजा करके, यह माना जाता था कि जिन राजाओं ने उन्हें बनाया था, उन्होंने पृथ्वी पर देवताओं का न्यायपूर्ण शासन लाया था।

- तंजावुर में राजराजेश्वर मंदिर में इस अवधि के दौरान बनाए गए मंदिरों में सबसे ऊंचा शिकारा (मंदिर का उभरता हुआ सर्पिल टॉवर) है। चूंकि उन दिनों इतने बड़े टॉवर के साथ एक इमारत का निर्माण करना मुश्किल था, क्रेन की अनुपस्थिति के कारण, वास्तुकारों ने आधार से मंदिर के शीर्ष तक एक झुका हुआ मार्ग बनाया। यह रास्ता मंदिर से चार किलोमीटर दूर शुरू हुआ था ताकि यह ज्यादा खड़ी न हो जाए। मंदिर बनने के बाद इस रास्ते को तोड़ दिया गया। यह निर्माण का एक बहुत ही अनोखा तरीका था। चारुपल्लम नामक मंदिर के पास के एक गाँव को आज भी 'झुकाव का गाँव' कहा जाता है।

The Rajarajeshvar temple at Thanjavur

- मध्य प्रदेश के खजुराहो में कंदरिया महादेव मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यह अपनी नक्काशीदार संरचनाओं के लिए जाना जाता है। इसका निर्माण 999 सीई में चंदेल वंश के



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

राजा धनगदेव द्वारा किया गया था। मंदिर के प्रवेश द्वार को खूबसूरती से उकेरा गया है और मुख्य हॉल की ओर जाता है जिसे महामंडप कहा जाता है जहाँ नृत्य किया जाता था। मुख्य देवता को गर्भगृह नामक मुख्य मंदिर में रखा गया था। इस स्थान पर केवल राजा, उनके करीबी परिवार के सदस्य और पुजारी ही एकत्रित होते थे। कंदरिया महादेव मंदिर एक शाही मंदिर था और इसलिए आम लोगों को प्रवेश नहीं दिया जाता था।

The Kandariya Mahadeva Temple at Khajuraho in Madhya Pradesh

- चूंकि मंदिरों को अक्सर राजाओं द्वारा अपनी शक्ति और धन के निशान के रूप में बनाया जाता था, इसलिए प्रतिद्वंद्वी हमलावर राजाओं द्वारा उन पर हमला किया जाता था। उदाहरण के लिए, जब पांडियन राजा श्रीमरा श्रीवल्लभ ने श्रीलंका पर आक्रमण किया, तो उन्होंने बौद्ध मंदिर को क्षतिग्रस्त कर दिया और बुद्ध की स्वर्ण प्रतिमा को जब्त कर लिया। बाद में, अगले सिंहली शासक, सेना द्वितीय ने मदुरै पर आक्रमण किया और बुद्ध की स्वर्ण प्रतिमा को खोजने के प्रयास किए।
- चोल राजा राजेंद्र प्रथम ने अपनी राजधानी में एक शिव मंदिर बनवाया जो पराजित शासकों से प्राप्त देवताओं की मूर्तियों से भरा हुआ था।
- गजनी के सुल्तान महमूद, जो राजेंद्र चोल के समय में रहते थे, ने भारत में कई मंदिरों पर हमला किया और उन्हें लूट लिया। गजनी की प्रसिद्ध लूटों में से एक सोमनाथ के मंदिर में थी। मंदिर को लूटकर, उसने खुद को इस्लाम के महान नायक के रूप में स्थापित करने की कोशिश की।

सुलतान इल्तुतमिश ने देहली-ए -कुहना के एकदम निकट एक विशाल तालाब का निर्माण करके व्यापक सम्मान प्राप्त किया। इस विशाल जलाशय को हौज-ए -सुल्तानी अथवा ‘ राजा का तालाब ‘ कहा जाता था।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

## मस्जिदें

मस्जिद एक मुस्लिम पूजा स्थल है। मुस्लिम सुल्तानों को फारसी इतिहास द्वारा 'ईश्वर की छाया' के रूप में वर्णित किया गया था।

- कुव्वत अल-इस्लाम मस्जिद दिल्ली में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा भारत में बनाई जाने वाली सबसे पुरानी मस्जिदों में से एक थी।
- जामी मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ ने अपनी नई राजधानी शाहजनाबाद में करवाया था। यह भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है और इसका मुख पश्चिम की ओर है।

**The Jama Masjid**

## हौज व जलाशय

एक शासक की कल्याणकारी गतिविधियों में से एक लोगों के लाभ के लिए जलाशयों का निर्माण करना था। जिस राजा ने कुओं, तालाबों या बावड़ियों का निर्माण किया था, उसे उसकी प्रजा बहुत सम्मान देती थी। कभी ये जलाशय मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारा (एक जगह जहां सिख पूजा करते हैं) का हिस्सा थे।

हौज-ए-सुल्तानी एक बड़ा जलाशय था जिसका निर्माण इल्तुतमिश ने दिल्ली-ए-कुहना के बाहर करवाया था।

## उद्यान

- मुगल शासक बाबर को बगीचों में गहरी दिलचस्पी थी। उन्होंने आम तौर पर आयताकार दीवारों वाले बाड़ों के भीतर बगीचे रखे जिन्हें कृत्रिम जल चैनलों द्वारा चार भागों में विभाजित किया गया था। इन उद्यानों को चार बागों के रूप में जाना जाने लगा क्योंकि ये चार सममित भागों में विभाजित थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• कश्मीर, दिल्ली और आगरा में अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ द्वारा कुछ महत्वपूर्ण चार बाग बनाए गए थे।

The Mughal gardens were divided into four divisions by artificial channels of water and were known as chahar baghs

## मकबरे

एक केंद्रीय विशाल गुंबद और एक लंबा प्रवेश द्वार मुगल वास्तुकला की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गया। ये विशेषताएं पहली बार हुमायूं के मकबरे में दिखाई दी थीं।

• इस मकबरे को एक बड़े चाहरबाग के बीच में रखा गया था। इसका निर्माण लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से किया गया था।

• शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण कराया, जो अब तक बनी सबसे बड़ी इमारतों में से एक है। उन्होंने ताजमहल के नक्शे में उद्यान को बनवाया।

The Taj Mahal

• ताजमहल सफेद संगमरमर से बनाया गया था। मकबरे को नदी के किनारे एक छत पर रखा गया था और इसके दक्षिण में एक बगीचा रखा गया था।

• यमुना नदी तक पहुंच पर नियंत्रण पाने के लिए शाहजहाँ द्वारा इस पद्धति को अपनाया गया था, जो अब तक रईसों के पास थी।

SHIVOM CLASSES 8696608541

## किले

• शाहजहाँ ने आगरा और दिल्ली के किलों में दीवान-ए-खास और दीवान-ए-आम का निर्माण करवाया।

The diwan-i-khas inside the Red Fort

• इन हॉलों के निर्माण की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी। दर्शकों के इन हॉलों को एक बड़े आंगन में रखा गया था।

• शाहजहाँ के दर्शकों के हॉल एक मस्जिद के सदृश थे। उनके सिंहासन को कुरसी पर रखा गया था जिसे अक्सर क़िबला (प्रार्थना के दौरान मुसलमानों द्वारा सामना की जाने वाली दिशा) के रूप में वर्णित किया जाता था क्योंकि अदालत के सत्र में सभी को उस दिशा का सामना करना पड़ता था। यह एक वास्तुशिल्प विशेषता थी जिसने सुझाव दिया कि राजा पृथ्वी पर भगवान का प्रतिनिधि है।

• शाहजहाँ ने अपने कुछ भवनों में पिएत्रा ड्यूरा की तकनीक का प्रयोग किया था। इस तकनीक में चित्र बनाने के लिए सज्जित, अत्यधिक पॉलिश और रंगीन पत्थरों की जड़ाई शामिल थी।

## क्षेत्र और साम्राज्य

• आठवीं से अठारहवीं शताब्दी तक भवनों के निर्माण में वृद्धि हुई। एक क्षेत्र में निर्माण के विचार कभी-कभी अन्य क्षेत्रों के समान होते थे।

• उदाहरण के लिए, विजयनगर में, शासकों के हाथी अस्तबल बीजापुर और गोलकुंडा के आस-पास के राज्यों में पाई जाने वाली स्थापत्य शैली से बहुत प्रभावित थे।

• मथुरा के पास वृंदावन में, मंदिरों की स्थापत्य शैली फतेहपुर सीकरी में मुगल महलों के समान थी।

• मुगल साम्राज्य में अलग-अलग क्षेत्रों को शामिल करने से विभिन्न स्थापत्य शैली का मेल हुआ।



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- मुगलों ने अपनी वास्तुकला में 'बांग्ला गुंबद' (एक इमारत की छत जो एक फूस की छत जैसा दिखता है) का इस्तेमाल किया।
- फतेहपुर सीकरी में कई इमारतों की स्थापत्य शैली गुजरात और मालवा की इमारतों से प्रभावित हो रही थी।
- मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद भी, उनकी स्थापत्य शैली ने देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न संरचनाओं के निर्माण को प्रभावित किया।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

## NCERT SOLUTIONS

## प्रश्न (पृष्ठ संख्या 73)

प्रश्न 1 वास्तुकला का अनुप्रस्थ टोडा निर्माण सिद्धांत चापाकार सिद्धांत से किस तरह भिन्न है ?

उत्तर – **अनुप्रस्थ टोड़ा :-** इसमें छत, दरवाजे और खिड़कियां दो ऊध्वाधर खम्भों के आर पार एक अनुप्रस्थ शहतीर रखकर बनाए जाते थे। इसमें चाप बीच से नौकादार था। वास्तुकला की यह शैली 'अनुप्रस्थ टोड़ा निर्माण' कहलाई जाती थी। आठवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच मंदिरों, मस्जिदों, मकबरों जैसे भवनो के निर्माण में इस शैली का प्रयोग हुआ था।

**चापाकार सिद्धांत :-** इसमें अधिचरना का भार मेहराबो पर ढाला जाता था। इसमें चाप बीच से गोलाकार था। इसमें चापबन्द प्रस्तर को वास्तविक चाप कहते है। वास्तुकला का यह चापाकार रूप था। इसमें चूना, पत्थर, सीमेंट का प्रयोग ज्यादा किया जाता था। इसमें उच्च श्रेणी की सीमेंट होती थी जिसमें पत्थर के टुकड़े मिलाने से कंकरीट बनती थी।

प्रश्न 2 शिखर से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – मंदिर के ऊपर की गई अधिरचना शिखर कहलाती है। अर्थात मंदिर के सबसे ऊपरी भाग को शिखर कहते है। यह बहुत ऊच्चा होता है जिसे बनाने के लिए वास्तुकारों को चढ़ाई दार रास्ता बनाना पड़ता था। क्योंकि उन दिनों कोई क्रेन नहीं होती थी। इसमें मंदिर के मुख्य देवी देवता की मूर्ति की स्थापना की जाती थी।

प्रश्न 3 पितरा – दूरा क्या है ?

उत्तर – यह एक वास्तुकला की शैली है। इस शैली के अंतर्गत बादशाह के सिंहाशन के पीछे पितरा दूरा के जड़ाऊ नाम की एक श्रृंख्ला बनाई गई थी जिसमें पौराणिक यूनानी देवता ऑर्फियस को वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया था। ऐसा माना जाता था कि ऑर्फियस का संगीत आक्रमक जानवरों को शांत कर सकता है। इस शैली में संगमरमर अथवा बलुआ पत्थर पर रंगीन, ठोस पत्थरों को दबाकर सुंदर तथा अलंकृत नमूने बनाए जाते थे।

प्रश्न 4 एक मुग़ल चारबाग की क्या खास विशेषताएँ हैं ?



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

SHIVOM CLASSES 8696608541

उत्तर – मुगल चारबाग की खास विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:- इन बागों को चार समान भागों में बाटा जाता था। यह बाग चार दीवारी से घिरे होते थे। इसके हर एक बाग़ में चार फूलों की क्यारियाँ होती थी। इनको नहरों द्वारा चार भागों में विभाजित किया जाता था और ये चार भाग- आयताकार अहाते में स्थित होते थे।

प्रश्न 5 किसी मंदिर से राजा की महत्ता की सूचना कैसे मिलती थी ?

उत्तर – किसी मंदिर से एक राजा की महत्ता की सूचना इसलिए मिलती है क्योंकि राजा मंदिर का निर्माण अपनी शक्ति, धन- सम्पदा और ईश्वर के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए करवाते थे। धार्मिक अनुष्ठान के माध्यम से मंदिर में एक देवता दूसरे देवता का सम्मान करता था। सभी विशालतम मंदिरों का निर्माण राजाओं ने करवाया था। मंदिर के अन्य लघु देवता शासक और उसके सहयोगियो द्वारा शासित विश्व का लघु रूप था। जिस तरह वे राजकीय मंदिरों में इकट्ठे होकर अपने देवताओं की उपासना करते थे, ऐसा प्रतीत होता था मानो उन्होने देवताओं के न्यायप्रिय शासन को पृथ्वी पर ला दिया हो।

प्रश्न 6 दिल्ली में शाहजहाँ के दीवान-ए-खास में एक अभिलेख में कहा गया है अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है?" यह धारणा कैसे बनी ?

उत्तर – शाहजहाँ द्वारा यमुना नदी के समीप लाल – किला बनवाया गया और लाल – किले के अन्दर दीवान – ए – खास। यह संगमरमर को बनी हुई अद्भुत इमारत है , जिसमें कई तरह की नक्काशियाँ बना गई हैं। इसकी सुन्दरता को देखते हुए ही दीवान – ए – खास में एक अभिलेख में यह कहा गया हैं " अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है। वह यहीं है, यहीं है, यहीं है । "

प्रश्न 7 मुगल दरबार से इस बात का कैसे संकेत मिलता था कि बादशाह कमज़ोर,धनी, निर्धन शक्तिशाली, सभी को समान न्याय मिलेगा ?

उत्तर – बादशाह के सिंहासन के पीछे पितरा दूरा के जड़ाऊ काम की एक श्रृंखला बनाई गई थी जिसमें पौराणिक यूनानी देवता ऑर्फियस को वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया था। ऐसा माना जाता था कि ऑर्फियस का संगीत आक्रामक जानवरों को भी शांत कर सकता है और वे एक – दूसरे



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

के साथ मिलजुल कर रह सकते हैं। यह मूर्ति सूचित करती थी कि न्याय करते समय राज ऊँचे तथा नीचे , गरीब तथा अमीर लोगों के साथ समान व्यवहार करेगा और सभी सद्भाव के साथ रह सकेंगे।

प्रश्न 8 शाहजहानाबाद में नए मुग़ल शहर की योजना में यमुना नदी की क्या भूमिका थी ?

उत्तर – शाहजहानाबाद में नए मुगल शहर की योजना में यमुना नदी की भूमिका निम्नलिखित थी:- नए शहर को नदी के किनारे बनाया गया था ताकि इस शहर को पीने के लिए पानी आसानी से मिल सके।केवल कुछ विशिष्ट कृपा प्राप्त अभिजातों को ही नदी किनारे पर घर बनाने की अनुमति थी।यमुना नदी के तटवर्ती भाग समतल थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541



SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)